

75. (ख़िज़र عليه السلام ने) कहा : क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि आप मेरे साथ रहे कर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे?

76. मूसा (عليه السلام) ने कहा : अगर मैं इसके बाद आपसे किसी चीज़की निस्वत सवाल करूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखिएगा, बेशक मेरी तरफसे आप हद्दे उज़्रको पहुंच गए हैं।

77. फिर दोनों चल पड़े यहां तक कि जब दोनों एक बस्तीवाल्लों के पास आ पहुंचे, दोनोंने वहां के बाशिन्दों से खाना तलब किया तो उन्होंने उन दोनोंकी मेज़बानी करनेसे इन्कार कर दिया, फिर दोनोंने वहां एक दीवार पाई जो गिरा चाहती थी तो (ख़िज़र عليه السلام ने) उसे सीधा कर दिया, मूसा (عليه السلام) ने कहा : अगर आप चाहते तो उस (ता'मीर) पर मजदूरी ले लेते।

78. (ख़िज़र عليه السلام ने) कहा : येह मेरे और आपके दरमियान जुदाई (का वक्त) है, अब मैं आपको उन बातोंकी हकीकतसे आगाह किए देता हूं जिन पर आप सब्र नहीं कर सके।

79. वोह जो कश्ती थी सो वोह चंद ग़रीब लोगों की थी वोह दरियामें मेहनत मजदूरी किया करते थे पस मैंने इरादा किया कि उसे ऐबदार कर दूं और (उस की वजह येह थी कि) उनके आगे एक (जाबिर) बादशाह (खड़) था जो हर (बे ऐब) कश्ती को ज़बर दस्ती (मालिकों से बिला मुआवज़ा) छीन रहा था।

80. और वोह जो लड़का था तो उसके मां बाप साहिबे ईमान थे पस हमें अन्देशा हुआ कि येह (अगर ज़िन्दा रहा तो काफ़िर बनेगा और) उन दोनों को (बड़ा हो कर) सरकशी और कुफ़्रमें मुब्तिला कर देगा।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ

تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٤٥﴾

قَالَ إِنْ سَأَلْتِكَ عَنْ شَيْءٍ
بَعْدَهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ

مِنْ لَدُنِّي عَذْرًا ﴿٤٦﴾

فَأَنطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا آتَيْتَا أَهْلَ

قَرْيَةٍ اسْتَطَعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ

يُصِيفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا

يُرِيدُ أَنْ يَمِشَّ فَاَقَامَهُ ۗ قَالَ

لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٤٧﴾

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ

سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ

عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٤٨﴾

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ

يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ

أَعْيِبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ

يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٤٩﴾

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ

فَخَشِينَا أَنْ يُرْهَقَهُمَا طُغْيَانًا وَ

كُفْرًا ﴿٥٠﴾

81. पस हमने इरादा किया कि उनका रब उन्हें (ऐसा) बदल अता फ़रमाए जो पाकीज़गी में (भी) उस (लडके) से बेहतर हो और शफ़क़तो रहमदिली में (भी वालिदैन से) क़रीबतर हो।

82. और वोह जो दीवार थी तो वोह शहर में (रहनेवाले) दो यतीम बच्चों की थी और उसके नीचे उन दोनों के लिए एक खज़ाना (मदफ़ून) था और उनका बाप सालेह (शख़्स) था, सो आपके रबने इरादा किया कि वोह दोनों अपनी जवानीको पहुंच जाएं और आपके रबकी रहमतसे वोह अपना खज़ाना (खुद ही) निकालें, और मैंने (जो कुछ भी किया) वोह अज़ खुद नहीं किया, येह उन (वाक़िआत) की हकीकत है जिन पर आप सब न कर सके।

83. और (ऐ हबीबे मुअज़्ज़म!) येह आपसे जुलकरनैन के बारेमें सवाल करते हैं, फ़रमा दीजिए : मैं अभी तुम्हें उसके हाल का तज़क़िरा पढ़ कर सुनाता हूं।

84. बेशक हमने उसे (ज़मानए क़दीम में) ज़मीन पर इक़तदार बख़्शा था और हमने उस(की सलतनत) को तमाम वसाइलो अस्बाब से नवाज़ा था।

85. पस वोह (मज़ीद) अस्बाब के पीछे चल पड़ा।

86. यहां तक कि वोह गुरूबे आफ़ताब (की सम्त आबादी) के आख़िरी किनारे पर जा पहुंचा वहां उसने सूरजके गुरूब के मन्ज़र को ऐसे महसूस किया जैसे वोह (कीचड़की तरह सियाह रंग) पानीके गरम चश्मे में डूब रहा हो और उसने वहां एक क़ौमको (आबाद) पाया। हमने फ़रमाया : ऐ जुलकरनैन! (येह तुम्हारी मरज़ी पर

فَأَرَادْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا
مِّنْهُ زَكْوَةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝۸۱

وَ أَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ
يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ
كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا
فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا
وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۗ وَمَفَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۗ ذَٰلِكَ
تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝۸۲

وَ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقَرْيَتَيْنِ ۗ
قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ۝۸۳

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝۸۴

فَاتَّبَعَ سَبَبًا ۝۸۵

حَتَّىٰ إِذَا بَدَغَ مَعْرِبَ الشَّسِ
وَجَدَهَا تَعْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ
وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا
لِذَٰلِكَ الْقَرْيَتَيْنِ إِنَّمَا أَنْتَ تُعَذِّبُ

मुन्हसिर है) ख़्वाह तुम उन्हें सज़ा दो या उनके साथ अच्छा सुलूक करो।

87. जुल करनैनने कहा : जो शख़्स (कुफ़्रो फ़िस्ककी सूरत में) जुल्म करेगा तो हम उसे ज़रूर सज़ा देंगे, फिर वोह अपने रबकी तरफ़ लौटाया जाएगा, फिर वोह उसे बहुत ही सख़्त अज़ाब देगा।

88. और जो शख़्स ईमान ले आएगा और नेक अमल करेगा तो उसके लिए बेहतर जज़ा है और हम (भी) उसके लिए अपने अहकाममें आसान बात कहेंगे।

89. (मगरिबमें फ़ुतूहात मुकम्मल करने के बाद) फिर वोह (दूसरे) रास्ते पर चल पड़ा।

90. यहां तक कि वोह तुलूए आप़ताब (की सम्त आबादी) के आख़िरी किनारे पर जा पहुंचा, वहां उसने सूरज (के तुलूअ के मन्ज़र) को ऐसे महसूस किया (जैसे) सूरज (ज़मीनके उस ख़ित्ते पर आबाद) एक क़ौम पर उभर रहा हो जिस के लिए हमने सूरजसे (बचावकी खातिर) कोई हिजाब तक नहीं बनाया था (या'नी वोह लोग बिगैर लिबास और मकान के गारों में रहेते थे)।

91. वाक़िआ इसी तरह है, और जो कुछ उसके पास था हमने अपने इल्मसे उसका अहाता कर लिया है।

92. (मशरिक में फ़ुतूहात मुकम्मल करने के बाद) फिर वोह (एक और) रास्ते पर चल पड़ा।

93. यहां तक कि वोह (एक मुक़ाम पर) दो पहाड़ों के दरमियान जा पहुंचा उसने उन पहाड़ों के पीछे एक ऐसी

وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نَعَذِّبُهُ
ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا
ثَقِيلًا ﴿٨٧﴾

وَإِمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ
جَزَاءٌ الْحُسْنَىٰ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ
أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾
ثُمَّ اتَّبَعَهُ سَبِيلًا ﴿٨٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا بَدَغَ مَطْلَعُ الشُّسُوسِ
وَجَدَهَا تَطْلَعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ
لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

كَذَلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ
خُبْرًا ﴿٩١﴾
ثُمَّ اتَّبَعَهُ سَبِيلًا ﴿٩٢﴾

حَتَّىٰ إِذَا بَدَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ
وَجَدَ مِنْ دُونِهَا قَوْمًا لَّا

कौमको आबाद पाया जो (किसी की) बात नहीं समझ सकते थे।

94. उन्होंने कहा : ऐ जुलकरनैन ! बेशक या'जूज और मा'जूजे ज़मीनमें फ़साद बपा कर रखा है तो क्या हम आपके लिए इस (शर्त) पर कुछ माले (ख़िराज) मुक़र्र कर दें कि आप हमारे और उनके दरमियान एक बुलंद दीवार बना दें।

95. (जुल करनैनने) कहा : मुझे मेरे रबने इस बारेमें जो इख़्तियार दिया है (वोह) बेहतर है, तुम अपने जोरे बाजू (या'नी मेहनतो मशक़त) से मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक मज़बूत दीवार बना दूंगा।

96. तुम मुझे लोहेकेबड़े बड़े टुकड़े ला दो, यहां तक कि जब उसने (वोह लोहेकी दीवार पहाड़ोंकी) दोनों चोटियोंके दरमियान बराबर कर दी तो केहने लगे (अब आग लगा कर उसे) धोंको, यहां तक कि जब उसने उस (लोहे) को (धोंक धोंक कर) आग बना डाला तो केहने लगा : मेरे पास लाओ (अब) मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूंगा।

97. फिर उन (या'जूज और मा'जूजे)में न इतनी ताकतथी के उस पर चढ़ सकें और न इतनी कुदरत पा सके कि उसमें सूराख़ कर दें।

98. (जुल करनैनने) कहा : येह मेरे रबकी जानिबसे रहमत है फिर जब मेरे रबका वा'दए (क़ियामत करीब) आएगा तो वोह उस दीवार को (गिरा कर) हमवार कर देगा (दीवार रेज़ा रेज़ा हो जाएगी) और मेरे रबका वा'दा बरहक़ है।

99. और हम उस वक़्त (जुमला मख़्लूकात या या'जूज

يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ٩٢

قَالُوا يَا الْقُرْنَيْنِ إِنَّ يَا جُوجَ
وَمَا جُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ

نَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ٩٣

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ
فَأَعِينُونِي بِقُوَّتِكُمْ
وَبِيئِهِمْ رَادًّا ٩٤

أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا
سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ
انفُخُوا ۗ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا
قَالَ أَتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ٩٥

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا
اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ٩٦

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي ۗ فَإِذَا
جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۗ
وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ٩٧

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي

और मा'जूजको) आज़ाद कर देंगे वोह (तेज़ो तुन्द मौजोंकी तरह) एक दूसरे में घुस जाएंगे और सूर फूँका जाएगा तो हम उन सबको (मेदाने हश्र में) जमा' कर लेंगे।

بَعْضٌ وَنُفَخَ فِي الصُّورِ فَجَعَلْنَاهُمْ
جَمْعًا ٩٩

100. और हम उस दिन दोज़ख़को काफ़ि़रों के सामने बिलकुल अयां करके पेश करेंगे।

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ
عَرْضًا ١٠٠

101. वोह लोग जिनकी आँखें मेरी याद से हिजाबे (ग़फ़लत) में थीं और वोह (मेरा ज़िक्र) सुन भी न सक्तेथे।

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غَطَاةٍ
عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ
سَمْعًا ١٠١

102. क्या काफ़िर लोग येह समझते हैं कि वोह मुझे छोड़ कर मेरे बंदोंको कारसाज़ बना लेंगे, बेशक हमने काफ़ि़रों के लिए जहन्नम की मेज़बानी को तैयार कर रखा है।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن
يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي
أَوْلِيَاءَ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ١٠٢

103. फ़रमा दीजिए : क्या हम तुम्हें ऐसे लोगोंसे ख़बरदार कर दें जो आ'माल के हिसाबसे सख़्त ख़सारा पानेवाले हैं।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ
أَعْمَالًا ١٠٣

104. येह वोह लोग हैं जिनकी सारी जद्दो जहद दुनिया की ज़िन्दगी में ही बरबाद हो गई और वोह येह ख़याल करते हैं कि हम बड़े अच्छे काम अंजाम दे रहे हैं।

الَّذِينَ ضَلَّ سَعِيَّهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ
يُحْسِنُونَ صُنْعًا ١٠٤

105. येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपने रबकी निशानियों का और (मरने के बाद) उससे मुलाक़ात का इन्कार कर दिया है सो उनके सारे आ'माल अकारत गए पस हम उनके लिए क़ियामत के दिन कोई वज़न और हैसियत (ही) काइम नहीं करेंगे।

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فَلَا تُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ١٠٥

106. येही दोजख ही उनकी जज़ा है इस वजह से कि वोह कुफ़्र करते रहे और मेरी निशानियों और मेरे रसूलोंका मज़ाक उड़ाते रहे।

ذٰلِكَ جَزَاۗهُمْ جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوۡۤا
وَالتَّخٰذُۗلِۙ وَالتَّيۡبِۙ وَرُسُلِۙ هٰۤؤُۤوَا ﴿١٠٦﴾

107. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो उनके लिए फ़िरदौस के बागात की मेहमानी होगी।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوۡا
الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّٰتُ
الْفِرْدٰوَسِۙ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

108. वोह उसमें हमेशा रहेंगे वहां से (अपना ठिकाना) कभी बदलना न चाहेंगे।

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا لَا يَبْعُوۡنَ عَنْهَا
حٰوِلًا ﴿١٠٨﴾

109. फ़रमा दीजिए : अगर समन्दर मेरे रबके कलिमात के लिए रोशनाई हो जाए तो वोह समन्दर मेरे रबके कलिमात के ख़त्म होने से पहले ही ख़त्म हो जाएगा अगरचे हम उसकी मिस्ल और (समन्दर या रोशनाई) मदद के लिए ले आए।

قُلْ لَّوْ كٰنَ الْبَحْرُ مَدٰۤاۙدًا لِّلْكٰلِمٰتِ
رَبِّيۙ لَتَفْعَدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَتَفَدَّ
كَلِمٰتُ رَبِّيۙ وَ لَوْ جَمَعْنَا بِسَبۡلِهِۦ
مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

110. फ़रमा दीजिए : मैं तो सिर्फ़ (बखिलकते जाहिरी) बशर होने में तुम्हारी मिस्ल हूँ (इसके सिवा और तुम्हारी मुझसे क्या मुनासिबत है ज़रा गौर करो) मेरी तरफ़ वही की जाती है (भला तुममें येह नूरी इस्ते'दाद कहाँ है कि तुम पर कलामे इलाही उतर सके) वोह येह कि तुम्हारा मा'बूद, मा'बूदे यक्ता ही है पस जो शख़्स अपने रबसे मुलाक़ात की उम्मीद रखता है तो उसे चाहिए कि नेक अमल करें और अपने रबकी इबादतमें किसी को शरीक न करे।

قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِىۡحٰنِ
اِلٰىۤ اَنْبَاۗءِ الْهُكْمِۙ اِلٰهٍ وَّاحِدٍۙ فَمَنْ
كَانَ يَرْجُوۡا لِقَاۗءَ رَبِّهٖۙ فَلْيَعْمَلْ
عَمَلًا صٰلِحًا وَّ لَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ
رَبِّهٖۙ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

आयातुहा 98

19 सूरतु मरय-म मक्किय्यतुन 44

उकूआतुहा 6

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

1. काफ़ हा या ऐन साद (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

كَهَيْعَصٍ ①

2. येह आपके रबकी रहमतका ज़िक्र है (जो उसने) अपने (बरगुजीदह) बंदे ज़करिय्या (ﷺ) पर (फ़रमाई थी)।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدًا
ذَكَرِيًّا ②

3. जब उन्होंने अपने रबको (अदब भरी) दबी आवाज़से पुकारा।

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ③

4. अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरे जिस्मकी हड्डियां कमजोर हो गई हैं और बुढ़ापे के बाइस सर आगके शो'ले की मानिन्द सफ़ेद हो गया है और ऐ मेरे रब ! मैं तुझसे मांग कर कभी महरूम नहीं रहा।

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَ
اسْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ
بُدْعًا بِكَ رَبِّ شَقِيًّا ④

5. और मैं अपने (रुख़सत हो जाने के) बाद (बे दीन) रिश्तेदारोंसे डरता हूँ (कि वोह दीनकी ने'मत ज़ाए' न कर बैठें) और मेरी बीवी (भी) बांझ है सो तू मुझे अपनी (ख़ास) बारगाह से एक वारिस (फ़रजंद) अता फ़रमा।

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي
وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي
مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ⑤

6. जो (आस्मानी ने'मत में) मेरा (भी) वारिस बने और या'कूब (ﷺ) की औलाद (के सिलसिलए नुबुव्वत) का (भी) वारिस हो और ऐ मेरे रब ! तू (भी) उसे अपनी रज़ा का हामिल बना ले।

يُرْسِلْنِي فِرثًا مِنْ آلِ يَعْقُوبَ
وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥

7. (इर्शाद हुवा) ऐ ज़करिय्या ! बेशक हम तुम्हें एक लड़केकी खुशख़बरी सुनाते हैं जिसका नाम यह्य़ा (ﷺ) होगा हमने उससे पेहले उसका कोई हमनाम नहीं बनाया।

يُرْكَرِيًّا إِنَّا نَبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ
لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦

8. (जकरिय्या عليه السلام ने) अर्ज किया : ऐ मेरे रब ! मेरे हां लड़का कैसे हो सकता है दर आं हाली कि मेरी बीवी बांझ है और में खुद बुढ़ापे के बाइस (इन्तिहाई जो 'फमें) सूख जानेकी हालत को पहुंच गया हूं।

9. फरमाया (तअज्जुब न करो) ऐसे ही होगा, तुम्हारे रबने फरमाया है यह (लड़का पैदा करना) मुझ पर आसान है और बेशक में इससे पेहले तुम्हें (भी) पैदा कर चुका हूं इस हालतसे कि तुम (सिरे से) कोई चीज ही न थे।

10. (जकरिय्या عليه السلام ने) अर्ज किया : ऐ मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी मुकरर फरमा, इशाद हुवा तुम्हारी निशानी यह है कि तुम बिल्कुल तंदुरुस्त होते हुए भी तीन रात (दिन) लोगों से कलाम न कर सकोगे।

11. फिर (जकरिय्या عليه السلام) हुजरए इबादत से निकल कर अपने लोगों के पास आए तो उनकी तरफ इशारा किया (और समझाया) कि तुम सुब्हो शाम (अल्लाह की) तस्बीह किया करो।

12. ऐ यह्या ! (हमारी) किताब (तौरात) को मजबूतीसे थामे रखो और हमने उन्हें बचपन ही से हिक्मतो बसीरत (नबुव्वत) अता फरमा दी थी।

13. और अपने लुत्फे खाससे (उन्हें) दर्दों गुदाज और पाकीजगी-व-तहारत (से भी नवाजा था), और वोह बड़े परहेजगार थे।

14. और अपने मांबाप के साथ बड़ी नेकी (और खिदमत) से पेश आनेवाले (थे) और (आम लड़कों की तरह) हरगिज सरकशो ना फरमान न थे।

15. और यह्या पर सलाम हो उनकी मीलाद के दिन और

قَالَ رَبِّ اَنْى يَكُونُ لِىْ عُلْمٌ
وَكَانَتْ اَمْرًا تىْ عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ

مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ⑧

قَالَ كَذَلِكَ ٤ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَى
هَيِّئِ وَّ قَدْ خَلَقْتِكْ مِنْ قَبْلُ

وَلَمْ تَكْ شَيْئًا ⑨

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لىْ اٰيَةً ٥ قَالَ
اٰيَتِكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ

لَيَالٍ سَوِيًّا ⑩

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ مِنَ الْبَحْرَابِ فَأُوْحى
اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ⑪

يَجِىْ حِذَا الْكُتُبِ بِقُوَّةٍ ٦ وَاَتَيْنَهُ
الْحُكْمَ صَبِيًّا ⑫

وَخَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكُوَّةً ٧ وَكَانَ
تَقِيًّا ⑬

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا
عَصِيًّا ⑭

وَسَلَّمَ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَ يَوْمَ

उनकी वफात के दिन और जिस दिन वोह ज़िन्दा उठाए जाएंगे।

16. और (ऐ हबीबे मुकर्रम!) आप किताब (कुरआन मजीद) में मरयम (عليها السلام) का जिक्र कीजिए, जब वोह अपने घरवालों से अलग हो कर (इबादत के लिए खल्वत इख्तियार करते हुए) मश्रिकी मकान में आ गई।

17. पस उन्होंने उन (घरवालों और लोगों) की तरफसे हिजाब इख्तियार कर लिया (ताकि हुस्ने मुल्लक अपना हिजाब उठा दे) तो हमने उनकी तरफ अपनी रूह (या'नी फरिश्ता जिबराईल) को भेजा सो (जिबराईल) उनके सामने मुकम्मल बशरी सूरत में जाहिर हुआ।

18. (मरयम عليها السلام) ने कहा : बेशक मैं तुझसे (खुदाए) रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तू (अल्लाह से) डरनेवाला है।

19. (जिबराईल عليه السلام) ने कहा : मैं तो फ़क़त तेरे रबका भेजा हुआ हूँ, (इस लिए आया हूँ) कि मैं तुझे एक पाकीज़ा बेटा अता करूँ।

20. (मरयम عليها السلام) ने कहा : मेरे हाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मुझे किसी इन्सान ने छुआ तक नहीं और न ही मैं बदकार हूँ।

21. (जिबराईल عليه السلام) ने कहा : (तअज्जुब न कर) ऐसे ही होगा, तेरे रबने फ़रमाया है : येह (काम) मुझ पर आसान है, और (येह इस लिए होगा) ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी और अपनी जानिबसे रहमत बना दें, और येह अम्र (पेहले से) तय शुदा है।

22. पस मरयम (عليها السلام) ने उसे पेटमें ले लिया और

يُمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥

وَإِذْ كُرِيَ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمُ إِذِ اتْتَبَدَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرِيفًا ۝١٦

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا وَإِنَّا سَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝١٧

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِن كُنْتَ تَقِيًّا ۝١٨

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكَ غُلَامًا زَكِيًّا ۝١٩

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۝٢٠

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّئٌ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا ۝٢١

فَحَلَّتْهُ فَاتْتَبَدَتْ بِهِ مَكَانًا

(आबादी से) अलग हो कर दूर एक मुकाम पर जा बैठीं।

23. फिर दर्देजेह उन्हें एक खजूर के तने की तरफ ले आया, वोह (परेशानी के आलम में) केहने लगीं : ऐ काश ! मैं पहले से मर गई होती और बिलकुल भूली बिसरी हो चुकी होती।

24. फिर उनके नीचे की जानिब से (जिबराईलने या खुद ईसा عليه ने) उन्हें आवाज़ दी कि तू रन्जीदह न हो बेशक तुम्हारे रबने तुम्हारे नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है (या तुम्हारे नीचे एक अजीमुल मर्तबा इन्सान को पैदा करके लिटा दिया है)।

25. और खजूर के तनेको अपनी तरफ हिलाओ वोह तुम पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरा देगा।

26. सो तुम खाओ और पियो और (अपने हसीनो जमील फरजन्द को देख कर) आँखें ठंडी करो, फिर अगर तुम किसी भी इन्सान को देखो तो (इशारे से) केह देना कि मैंने (खुदाए) रहमानके लिए (खामोशी के) रोजेकी नज़र मानी हुई है सो मैं आज किसी इन्सानसे कत्अन गुफतगू नहीं करूंगी।

27. फिर वोह उस (बच्चे) को (गोद में) उठाए हुए अपनी क़ौमके पास आ गईं। वोह केहने लगे ऐ मरयम ! यकीनन तू बहुत ही अजीब चीज़ लाई है।

28. ऐ हारून की बहन ! न तेरा बाप बुरा आदमी था और न ही तेरी मां बदचलन थी।

29. तो मरयम (عليها) ने उस (बच्चे) की तरफ इशारा

قَصِيًّا ٢٢

فَاجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جِدْعِ
النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ
هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مَنْسِيًّا ٢٣

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي
قَدْ جَعَلْنَا رُبُّكَ تَحْتَكِ سَرِيًّا ٢٤

وَهَزَمْنِي إِلَيْكَ بِجِدْعِ النَّخْلَةِ
تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا ٢٥
فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا فَمَا
تَرَيْنَنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي
إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ
أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ٢٦

فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ط قَالُوا
يَسْرِيمُ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا فَرِيًّا ٢٧

يَا خُتُّ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ امْرَأَ
سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ٢٨
فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ط قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ

किया, वोह केहने लगे : हम उससे किस तरह बात करें जो (अभी) गेहवारे में बच्चा है?

30. (बच्चा खुद) बोल पड़ा बेशक मैं अल्लाह का बंदा हूँ उसने मुझे किताब अता फ़रमाई है और मुझे नबी बनाया है।

31. और मैं जहां कहीं भी रहूँ उसने मुझे सरापा बरकत बनाया है और मैं जब तक (भी) ज़िन्दा हूँ उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म फ़रमाया है।

32. और अपनी वालिदा साथ नेक सुलूक करनेवाला (बनाया है) और उसने मुझे सरकशो बदबख़्त नहीं बनाया।

33. और मुझ पर सलाम हो मेरे मीलाद के दिन, और मेरी वफ़ातके दिन, और जिस दिन मैं ज़िन्दा उठाया जाऊंगा।

34. येह मरयम के बेटे ईसा (ﷺ) हैं, (येही) सच्ची बात है जिसमें येह लोग शक करते हैं।

35. येह अल्लाह की शान नहीं कि वोह (किसीको अपना) बेटा बनाए, वोह (उससे) पाक है जब वोह किसी कामका फ़ैसला फ़रमाता है तो उसे सिर्फ़ येही हुक्म देता है "हो जा" बस वोह हो जाता है।

36. और बेशक अल्लाह मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है सो तुम उसी की इबादत किया करो, येही सीधा रास्ता है।

37. फिर उनके फ़िके आपसमें इख़िलाफ़ करने लगे, पस काफ़ि़रों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिनकी हाज़िरी से तबाही है।

مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝٢٩

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ لُتَّبِئِي الْكِتَابَ
وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝٣٠

وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا آيِنَ مَا كُنْتُ ۖ
وَ أَوْطِنِي بِالصَّلَاةِ وَ الزَّكَاةِ
مَا دُمْتُ حَيًّا ۝٣١

وَ بَرًّا بِوَالِدَتِي ۖ وَ لَمْ يَجْعَلْنِي
جَبَّارًا شَقِيًّا ۝٣٢

وَ السَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَ يَوْمَ
أَمُوتُ وَ يَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝٣٣

ذٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ
الْحَقِّ الَّذِي فِئِهِ يَتَّرُونَ ۝٣٤

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ
سُبْحٰنَهُ ۗ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاَتٰنَا
بِقَوْلٍ لَّهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٣٥

وَ اِنَّ اللّٰهَ رَءِىُّ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٣٦

فَاخْتَلَفَ الْاَحْرَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ
فَوَيْلٌ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٣٧

38. जिस दिन वोह हमारे पास हाज़िर होंगे तो कैसे (कान खोल कर) सुनेंगे और (आँखें फाड़ फाड़ कर) देखेंगे लेकिन ज़ालिम लोग आज खुली गुमराही में (ग़र्क) हैं।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصُرْ لَا يَوْمَ يَأْتُونَنَا
لَكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ
مُّبِينٍ ٣٨

39. और आप उन्हें हसरत (व नदामत)के दिनसे डराइए जब (हर) बातका फैसला कर दिया जाएगा, मगर वोह ग़फ़लत (की हालत) में पड़े हैं और ईमान लाते ही नहीं।

وَ أَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ
قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَ
هُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٣٩

40. बेशक हम ही ज़मीन के (भी) वारिस हैं और उनके (भी) जो उस पर (रेहते) हैं और (सब) हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَ مَنْ
عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ٤٠

41. और आप किताब (कुरआन मजीद) में इब्राहीम (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए, बेशक वोह बड़े साहिबे सिद्क़ नबी थे।

وَ اذْكُرْ فِي الْكِتَابِ اِبْرَاهِيمَ اِنَّهُ
كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ٤١

42. जब उन्होंने अपने बाप (या'नी चचा आजर से जिसने आपके वालिद तारिख़ के इन्तिकाल के बाद आपको पाला था) से कहा : ऐ मेरे बाप ! तुम इन (बुतों की परस्तिश क्यों करते हो जो न सुन सकते हैं और न देख सकते हैं और न तुमसे कोई (तक्लीफ़ देह) चीज़ दूर कर सकते हैं।

اِذْ قَالَ لِ اَبِيهِ يَا بَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا
لَا يَسْمَعُ وَ لَا يُبْصِرُ وَ لَا يُعْزِي
عَنْكَ شَيْئًا ٤٢

43. ऐ अब्बा ! बेशक मेरे पास (बारगाहे इलाहीसे) वोह इल्म आ चुका है जो तुम्हारे पास नहीं आया तुम मेरी पैरवी करो मैं तुम्हें सीधी राह दिखाऊंगा।

يَا بَتِ اِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ
مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي اَهْدِكَ
صِرَاطًا سَوِيًّا ٤٣

44. ऐ अब्बा ! शैतानकी परस्तिश न किया करो, बेशक शैतान (खुदाए) रहमान का बड़ा ही ना फ़रमान है।

يَا بَتِ لَّا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ط اِنَّ
الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ٤٤

45. ऐ अब्बा ! बेशक मैं इस बातसे डरता हूँ कि तुम्हें

يَا بَتِ اِنِّي اَخَافُ اَنْ يَّسَّكَ عَذَابٌ

(खुदाए) रहमानका अज़ाब पहुंचे और तुम शैतानके साथी बन जाओ।

46. (आज़र ने) कहा : ऐ इब्राहीम! क्या तुम मेरे मा'बूदोंसे रू गरदां हो ? अगर वाकई तुम (इस मुखालिफत से) बाज़ न आए तो मैं तुम्हें ज़रूर संगसार कर दूंगा और एक तवील अर्से के लिए तुम मुझसे अलग हो जाओ।

47. (इब्राहीम عليه السلام ने) कहा (अच्छा) तुम्हें सलाम, मैं अब (भी) अपने रबसे तुम्हारे लिए बख़्शिश मांगूंगा, बेशक वोह मुझ पर बहुत महरबान है (शायद) तुम्हें हिदायत अता फ़रमा दे)।

48. और मैं तुम (सब) से और उन (बुतों) से जिन्हें तुम अल्लाहके सिवा पूजते हो कनारा कश होता हूं और अपने रबकी इबादतमें (यक्सू हो कर) मसरूफ़ होता हूं, उम्मीद है मैं अपने रबकी इबादत के बाइस महरूमे (करम) न रहूंगा।

49. फिर जब इब्राहीम (عليه السلام) उन लोगोंसे और उन (बुतों) से जिनकी वोह अल्लाहके सिवा परस्तिश करते थे (मेल मिलाप छोड़ कर) बिल्कुल जुदा हो गए (तो) हमने उन्हें इस्हाक़ और या'कूब (عليه السلام) (बेटे और पोते) से नवाज़ा, और हमने हर (दो) को नबी बनाया।

50. और हमने उन (सब) को अपनी (खास) रहमत बख़्शी और हमने उनके लिए (हर आस्मानी मजूहबके माननेवालों में) ता'रीफ़ो सताइश की ज़बान बुलंद कर दी।

51. और (इस) किताब में मूसा (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए

مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنُ لِلشَّيْطٰنِ
وَلِيًّا ۝۳۵

قَالَ اَرَاعِبُ اَنْتَ عَنِ الْهَيْئِ
يٰۤاِبْرٰهِيْمُ لِيْنِ لَّمْ تَنْتَه
لَا رَجْسَكَ وَاَهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ۝۳۶

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ سَاَسْتَغْفِرُكَ
رَبِّيْ ۙ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ۝۳۷

وَاعْتَرٰكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ عَسٰى اَلَّا
اَكُوْنَ بِدُعَاۓ رَبِّيْ شَقِيًّا ۝۳۸

فَلَمَّا اعْتَرٰهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗ اِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ۙ وَكَلَّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝۳۹

وَ وَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَّحْمٰتِنَا وَجَعَلْنَا
لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝۴۰
وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰى ۙ اِنَّهٗ

बेशक वोह (नफ़सकी गिरफ़तसे ख़लासी पा कर) बरगुज़ीदा हो चुके थे और साहिबे रिसालत नबी थे।

52. और हमने उन्हें (कोहे) तूरकी दाहिनी जानिबसे निदा दी और राज़ो नियाज़की बातें करने के लिए हमने उन्हें कुर्बते (खास) से नवाज़ा।

53. और हमने अपनी रहूमत से उनके भाई हारून (ﷺ) को नबी बना कर उन्हें बख़्शा (ताकि वोह उनके काममें मुआविन हों)।

54. और आप (इस) किताब में इस्माईल (ﷺ) का ज़िक्र करें बेशक वोह वा'दे के सच्चे थे और साहिबे रिसालत नबी थे।

55. और वोह अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे और वोह अपने रबके हुज़ूर मक़ामे मरज़िय्या पर (फ़ाइज़) थे (या'नी उनका रब उनसे राज़ी था)।

56. और (इस) किताबमें इद्रीस (ﷺ) का ज़िक्र कीजिए बेशक वोह बड़े साहिबे सिदक़ नबी थे।

57. और हमने उन्हें बुलंद मुक़ाम पर उठा लिया था।

58. येह वोह लोग है जिन पर अल्लाहने इन्आम फ़रमाया है जुमरए अंबिया में से आदम (ﷺ) की औलाद से हैं और उन (मोमिनों) में से हैं जिन्हें हमने नूह (ﷺ) के साथ कश्तीमें (तूफ़ानसे बचा कर) उठा लिया था, और इब्राहीम (ﷺ) की और इसराईल (या'नी या'कूब (ﷺ)) की औलादसे हैं और उन (मुत्तख़ब) लोगों में से हैं जिन्हें

كَانَ مُخْلِصًا وَكَانَ رَسُولًا
نَبِيًّا ٥١

وَ نَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ
الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ رَجِيًّا ٥٢

وَ وَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا آخَاهُ
هُرُونَ نَبِيًّا ٥٣

وَ اذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ
كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا
نَبِيًّا ٥٤

وَ كَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَ الزُّكُوفِ
وَ كَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ٥٥

وَ اذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيْسَ إِنَّهُ
كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ٥٦

وَ رَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ٥٧

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَ
مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَ مِمَّنْ
ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَ إِسْرَائِيلَ إِذَا
وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَ اجْتَبَيْنَا إِذَا

हमने हिदायत बख्शी और बरगुजीदह बनाया, जब उन पर (खुदाए) रहमानकी आयतों की तिलावत की जाती है वोह सच्चे करते हुए और (जा़रो क़तार) रोते हुए गिर पड़ते हैं।

59. फिर उनके बाद वोह ना खल्फ़ जा नशीन हुए जिन्होंने नमाज़ें जाए' कर दीं और ख़्वाहिशाते (नफ़्सानी) के पैरव हो गए तो अ़नक़रीब वोह आख़िरत के अज़ाबे (दोज़ख़की वादिए ग़य्य) से दो चार होंगे।

60. सिवाए उस शख़्स के जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अ़मल करता रहा तो येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर कुछ भी जुल्म नहीं किया जाएगा।

61. ऐसे सदाबहार बागात में (रहेंगे) जिनका (खुदाए) रहमानने अपने बंदोंसे ग़ैबमें वा'दा किया है, बेशक उसका वा'दा पहुंचने ही वाला है।

62. वोह उसमें कोई बेहूदा बात नहीं सुनेंगे मगर (हर तरफ़से) सलाम (सुनाई देगा), उनके लिए उनका रिज़क़ उसमें सुब्हो शाम (मुयस्सर) होगा।

63. येह वोह जन्नत है जिसका हम अपने बन्दों में से उसे वारिस बनाएंगे जो मुत्तकी होगा।

64. और (जिबराईल मेरे हबीब ﷺ से कहो कि) हम आपके रबके हुक्मके बिग़ैर (ज़मीन पर) नहीं उतर सकते, जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ उसके दरमियान है (सब) उसीका है, और आपका रब (आपको) कभी भी भूलनेवाला नहीं है।

تُتلى عَلَيْهِمُ آيَاتُ الرَّحْمَنِ حَرَوًا
سُجَّدًا وَبُكْيًا ٥٨

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
أَصَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ
فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ عَذَابًا ٥٩

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَ
لَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ٦٠

جَنَّتِ عَدْنِ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ
عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ٦١ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ
مَأْتِيًا ٦١

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لُعَا ٦٢
وَلَهُمْ فِيهَا بُكْرَةٌ وَأَعْيَابٌ ٦٢

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ
عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ٦٣

وَمَا نُنزِّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ٦٤ لَهُ مَا
بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ
ذَلِكَ ٦٤ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ٦٤

65. (वोह) आस्मानों और ज़मीनका और जो कुछ उन दो के दरमियान है (सब) का रब है पस उसकी इबादत कीजिए और उसकी इबादतमें साबित क़दम रहिए, क्या आप उसका कोई हमनाम जानते हैं ?

66. और इन्सान केहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो अ़नक़रीब जिन्दा करके निकाला जाऊंगा?

67. क्या इन्सान येह बात याद नहीं करता कि हमने इससे पेहले (भी) उसे पैदा किया था जबकि वोह कोई चीज़ ही न था।

68. पस आपके रबकी क़सम हम उनको और (जुमला) शैतानों को (क़ियामत के दिन) ज़रूर जमा' करेंगे फिर हम उन (सब) को जहन्नम के गिर्द ज़रूर हाज़िर कर देंगे इस तरह कि वोह घुटनोंके बल गिरे पड़े होंगे।

69. फिर हम हर गिरोहसे ऐसे शख्सको ज़रूर चुन कर निकालेंगे जो उनमें से (खुदाए) रहमान पर सबसे ज़ियादह ना फ़रमानो सरकश होगा।

70. फिर हम उन लोगोंको ख़ूब जानते हैं जो दोज़ख़में झोंके जानेकी ज़ियादह सज़ावार हैं।

71. और तुम में से कोई शख्स नहीं है मगर उसका उस (दोज़ख़) परसे गुज़र होनेवाला है येह (वा'दा) क़तई तौर पर आपके रबके जिम्मे है जो ज़रूर पूरा हो कर रहेगा।

72. फिर हम परहेज़गारों को नजात दे देंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।

73. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ
هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ٦٥

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَاتَ
لَسَوْفَ أُحْرَجُ حَيًّا ٦٦

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ
مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ٦٧

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ
لَنَحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ٦٨

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ
أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ٦٩

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَى
بِهَا صَلِيًّا ٧٠

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ
عَلَى رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ٧١

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ
الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ٧٢

وَإِذَا تَتلى عَلَيْهِمُ الْآيَاتُ بَيِّنَاتٍ

जाती हैं तो काफ़िर लोग ईमानवालोंसे कहते हैं : (इसी दुनिया में देख लो हम) दोनों गिरोहों में से किस की रहाइशगाह बेहतर और मजलिस खूबतर है।

74. और हमने उनसे पेहले कितनी ही कौमों को हलाक कर डाला जो साज़ो सामाने ज़िन्दगी और नुमूदो नुमाइश के लिहाज़से (उनसे भी) कहीं बेहतर थे।

75. फ़रमा दीजिए : जो शख्स गुमराही में मुब्तिला हो तो (खुदाए) रहमान (भी) उसे उम्रो ऐश में खूब मोहलत देता रेहता है, यहां तककि जब वोह लोग उस चीज़को देख लेंगे जिसका उनसे वा'दा किया गया है ख़्वाह अज़ाब और ख़्वाह क़ियामत, तब वोह उस शख्सको जान लेंगे जो रहाइशगाह के ए'तिबार से (भी) बुरा है और लश्कर के ए'तितबार से (भी) कमज़ोर तर है।

76. और अल्लाह हिदायत याफ़्ता लोगोंकी हिदायत में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाता है, और बाक़ी रेहनेवाले नेक आ'माल आपके रबके नज़दीक अज़ो सवाब में (भी) बेहतर हैं और अंजाम में (भी) खूबतर हैं।

77. क्या आपने उस शख्स को देखा है जिसने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और केहने लगा : मुझे (क़ियामत के रोज़ भी इसी तरह) मालो औलाद ज़रूर दिए जाएंगे।

78. वोह ग़ैब पर मुत्तला' है या उसने (खुदाए) रहमान से (कोई) अहद ले रखा है?

79. हरगिज़ नहीं, अब हम वोह सब कुछ लिखते रहेंगे जो वोह केहता है और उसके लिए अज़ाब (पर अज़ाब) खूब बढ़ाते चले जाएंगे।

قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ
آمَنُوا لَا آمِي الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا
وَ أَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٤٣﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ
أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئَاءِيًّا ﴿٤٤﴾

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَبْدُدْ لَهُ
الرَّحْمَنُ مَدًّا حَتَّى إِذَا رَأَوْا مَا
يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَ إِمَّا
السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ
مَكَانًا وَ أضعفُ جُنْدًا ﴿٤٥﴾

وَ يَزِيدُ اللهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا
هُدًى وَ الْبَقِيَّةُ الصَّلِحَةُ خَيْرٌ
عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَ خَيْرٌ مَرَدًّا ﴿٤٦﴾

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَ قَالَ
لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَ وَلَدًا ﴿٤٧﴾

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿٤٨﴾

كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَ نَبُدُّهُ
مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٤٩﴾

80. और (मरने के बाद) जो यह केह रहा है उसके हम ही वारिस होंगे और वोह हमारे पास तन्हा आएगा (उसके मालो औलाद साथ न होंगे)।

وَنَرِيهِ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝۸۰

81. और उन्होंने अल्लाह के सिवा (कई और) मा'बूद बना लिए हैं ताकि वोह उनके लिए बाइसे इज़्जत हों।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لِيُكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝۸۱
كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ

82. हरगिज़ (ऐसा) नहीं है, अन्करीब वोह (मा'बूदाने बातिला खुद) उनकी परस्तिश का इन्कार कर देंगे और उनके दुश्मन हो जाएंगे।

عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝۸۲

83. क्या आपने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफ़िरों पर भेजा है वोह उन्हें हर वक़्त (इस्लामकी मुख़ालिफ़त पर) उक्साते रहेते हैं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ
عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤْمَرُهُمْ وَأَسْرَأُ ۝۸۳

84. सो आप उन पर (अज़ाबके लिए) जल्दी न करें हम तो खुद ही उनके (अंजामके) लिए दिन शुमार करते रहेते हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ
عَدًّا ۝۸۴

85. जिस दिन हम परहेज़गारों को जमा' कर के (खुदाए) रहमान के हुज़ूर (मोअज़्ज़ज़ मेहमानों की तरह) सवारियों पर ले जाएंगे।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ
وَقَدًّا ۝۸۵

86. और हम मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ प्यासा हांक कर ले जाएंगे।

وَنَسُوقُ الْجَائِرِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝۸۶

87. (उस दिन) लोग शफ़ाअत के मालिक न होंगे सिवाए उनके जिन्होंने (खुदाए) रहमान से वा'दए (शफ़ाअत) ले लिया है।

لَا يَسْتَلْذُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ
اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝۸۷

88. और (काफ़िर) केहते हैं कि (खुदाए) रहमानने (अपने लिए) लड़का बना लिया है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۝۸۸

89. (ऐ काफ़िरो!) बेशक तुम बहुत ही सरज़ और अज़ीब बात (ज़बान पर) लाए हो।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذَا ۝۸۹

90. कुछ बर्द नहीं कि उस (बोहतान) से आस्मान फट पड़ें और ज़मीन शक हो जाए और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो कर गिर जाएं।

كَادُ السَّمَوَاتُ يَتَّقَطُّنَ مِنْهُ
وَتَتَشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخْرُ الْجِبَالُ
هَذَا ٩٠

91. कि उन्होंने (खुदाए) रहमान के लिए लड़के का दा'वा किया है।

أَنْ دَعَا الرَّحْمَنَ وَلَدًا ٩١

92. और (खुदाए) रहमान की शायाने शान नहीं है कि वोह (किसीको अपना) लड़का बनाए।

وَمَا يَتَّبِعِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ
وَلَدًا ٩٢

93. आस्मानों और ज़मीनमें जो कोई भी (आबाद) हैं (ख़्वाह फ़रिश्ते हैं या जिन्नो इन्स) वोह अल्लाह के हुज़ूर महज़ बंदे के तौर पर हाज़िर होनेवाले हैं।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ٩٣

94. बेशक उस (अल्लाह) ने उन्हें अपने (इल्मके) अहाते में ले लिया है और उन्हें (एक एक कर के) पूरी तरह शुमार कर रखा है।

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ٩٣

95. और उनमें से हर एक क़ियामत के दिन उसके हुज़ूर तन्हा आनेवाला है।

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ٩٥

96. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए तो (खुदाए) रहमान उनके लिए (लोगोंको) दिलों में मुहब्बत पैदा फ़रमा देगा।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ
وَدًّا ٩٦

97. सो बेशक हमने इस (कुरआन) को आपकी ज़बान में ही आसान कर दिया है ताकि आप इसके ज़रीए परहेज़गारों को खुशख़बरी सुना सकें और इसके ज़रीए झगड़ालू कौमको डर सुना सकें।

فَاتَّبَعْنَا بِسُرَّتِهِ لِيُنَبِّئَ بِهِ
الْمُتَّقِينَ وَنُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ٩٧

98. और हमने उनसे पहले कितनी ही कौमों को हलाक

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ ٩٨

कर दिया है, क्या आप उनमें से किसी का वुजूद भी देखते हैं या किसी की कोई आहट भी सुनते हैं?

هَلْ تَحْسُ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ
تَسْمَعُ لَهُمْ رَكْزًا ۙ (٩٨)

आयातुहा 135

20 सूरतु ताँहा मक्किय्यतुन 45

उकूआतुहा 8

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है ।

1. ताँहा (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही

طه ①

बेहतर जानते हैं) ।

2. (ऐ महुबूबे मुकर्रम !) हमने आप पर कुरआन (इस लिए) नाज़िल नहीं फ़रमाया कि आप मशक़त में पड़ जाएं ।

مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ۙ (٢)

3. मगर (उसे) उस शख्सके लिए नसीहत (बना कर उतारा) है जो (अपने रबसे) डरता है ।

إِلَّا تَذَكَّرَ لَا لِمَنْ يَخْشَى ۙ (٣)

4. (येह) उस (अल्लाह) की तरफ़से उतारा हुआ है जिसने ज़मीन और बुलंदो बाला आस्मान पैदा फ़रमाए ।

تَنْزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ
وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ۙ (٤)

5. (वोह) निहायत रहमत वाला (है) जो अर्श (या'नी जुम्ला निज़ामहाए काइनात के इक्तदार) पर मु-त-मक्किन हो गया ।

الرَّحْمٰنِ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۙ (٥)

6. (पस) जो कुछ आस्मानों (की बालाई नूरी काइनातों और ख़लाई माद्दी काइनातों)में है और जो कुछ ज़मीनमें है और जो कुछ उन दोनों के दरमियान (फ़जाई और हवाई कुरों में) है और जो कुछ सत्दे अरज़ी के नीचे आख़िरी तेह तक है सब उसीके (निज़ाम और कुदरत के ताबे) हैं ।

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ
الْأَرْضِ ۙ (٦)

7. और अगर आप ज़िक्रो दुआमें जहर (या'नी आवाज़ बुलंद) करें (तो भी कोई हर्ज नहीं) वोह तो सिर्र (या'नी दिलोंके राजों) और अख़फ़ा (या'नी सबसे ज़यादह मुख़फ़ी भेदों) को भी जानता है (तो बुलंद इल्लिजाओं को क्यों नहीं सुनेगा) ।

وَإِنْ تَجَهَّرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ
السِّرَّ وَأَخْفَى ۙ (٧)

8. अल्लाह (उसीका इस्मे ज़ात) है जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं (गोया तुम उसीका अस्बात करो और बाकी सब झूटे मा'बूदों की नफ़ी कर दो) उसके लिए (और भी) बहुत खूबसूरत नाम हैं (जो उसकी हसीनो जमील सिफ़ात का पता देते हैं)।

9. और क्या आपके पास मूसा (ﷺ) की ख़बर आ चुकी है?

10. जब मूसा (ﷺ) ने (मद्यन से वापस मिस्र आते हुए) एक आग देखी तो उन्होंने अपने घरवालों से कहा तुम यहां ठेहरे रहो मैंने एक आग देखी है (या मैंने एक आग में उन्सो महबूतका शो'ला पाया है) शायद मैं उसमें से कोई चिंगारी तुम्हारे लिए (भी) ले आऊं या मैं उस आग पर (से वोह) रहनुमाई पा लूं (जिसकी तलाश में सरगर्दा हूं)।

11. फिर जब वोह उस (आग) के पास पहुंचे तो निदा की गई ऐ मूसा!

12. बेशक मैं ही तुम्हारा रब हूं सो तुम अपने जूते उतार दो, बेशक तुम तुवा की मुक़द्दस वादी में हो।

13. और मैंने तुम्हें (अपनी रिसालत के लिए) चुन लिया है पस तुम पूरी तवज्जोह से सुनो जो तुम्हें वही की जा रही है।

14. बेशक मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं सो तुम मेरी इबादत किया करो और मेरी यादकी खातिर नमाज़ काइम किया करो।

15. बेशक क़ियामतकी घड़ी आनेवाली है, मैं उसे पोशीदा रखना चाहता हूं ताकि हर जानको उस (अमल) का बदला दिया जाए जिसके लिए वोह कोशां है।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ط لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى ⑧

وَهَلْ أُنْتِكَ حَدِيثٌ مُّوسَى ⑨
إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا
إِنِّي آنَسْتُ نَارًا الْعَلَىٰ أَيْتِيكُمْ مِنْهَا
بِقَبَسٍ أَوْ آجِدُ عَلَى النَّارِ
هُدًى ⑩

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ لِيُؤسَى ط ⑪

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ⑫
إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ⑬
وَأَنَا آخِزْتُكَ فَاسْتَبِعْ لِمَا يُوحَى ⑭

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا
فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ⑮
إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُحْفِيهَا
لِيُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَى ⑯

16. पस तुम्हें वोह शख्स उस (के घ्यान) से रोके न रखे जो (खुद) उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख्वाहिश (नफ़स) का पैरव है वरना तुम (भी) हलाक हो जाओगे।

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ
بِهَا وَاتَّبَعَهُ هُوَ فَتَرُدُّى ①٦

17. और येह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? ऐ मूसा!

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسَى ①٧

18. उन्होंने कहा येह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ और मैं इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इसमें मेरे लिए कई और फायदे भी हैं।

قَالَ هِيَ عَصَاىَ اَتَوَكَّلُ عَلَيْهَا وَاَهْسُ بِهَا عَلَىٰ غَنَمىَ وَاِىَّ فِىهَا
مَا رَبُّ اٰخَرى ①٨

19. इर्शाद हुवा : ऐ मूसा! उसे (जमीन पर) डाल दो।

قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوسَى ①٩

20. पस उन्होंने उसे (जमीन पर) डाल दिया तो वोह अचानक सांप हो गया (जो इधर उधर) दौड़ने लगा।

فَاَلْقَمَهَا فَاِذَا هى حَيَّةٌ تَسْعى ②٠

21. इर्शाद फ़रमाया : उसे पकड़ लो और मत डरो हम उसे अभी उसकी पेहली हालत पर लौटा देंगे।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ وَسَنُعِيدُهَا
سَيَّرَتَهَا الْاُولى ②١

22. और (हुक्म हुआ) अपना हाथ अपनी बगलमें दबा लो वोह बिगैर किसी बीमारी के सफेद चमकदार हो कर निकलेगा (येह) दूसरी निशानी है।

وَاصْبِرْ يَدَكَ اِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيِّضًا مِنْ غَيْرِ سَوْءٍ اٰيَةً اٰخَرى ②٢

23. येह इस लिए (कर रहे हैं) कि हम तुम्हें अपनी (कुदरत की) बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं।

لِنُرِيكَ مِنْ اٰيَاتِنَا الْكُبْرى ②٣

24. तुम फ़िरऔनके पास जाओ वोह (ना फ़रमानी और सरकशी में) हदसे बढ़ गया है।

اِذْهَبْ اِلَىٰ فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغى ②٤

25. (मूसा عليه السلام ने) अर्ज किया : ऐ मेरे रब! मेरे लिए मेरा सीना कुशादह फ़रमा दे।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِى صَدْرِى ②٥

26. और मेरा कारे (रिसालत) मेरे लिए आसान फ़रमा दे।

وَيَسِّرْ لِى اَمْرِى ②٦

27. और मेरी ज़बानकी गिरह खोल दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانى ②٧

28. के लोग मेरी बात (आसानी से) समझ सकें।

يَقْفَهُوا قَوْلِي ۝۲۸

29. और मेरे घरवालों में से मेरा एक वज़ीर बना दे।

وَأَجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۝۲۹

30. (वोह) मेरा भाई हारून (عليه السلام) हो।

هُرُونَ أَخِي ۝۳۰

31. उससे मेरी कमरे हिम्मत मज़बूत फ़रमा दे।

أَشْدِدْ بِهِ أَرْبَمِي ۝۳۱

32. और उसे मेरे कारे (रिसालत) में शरीक फ़रमा दे।

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۝۳۲

33. ताकि हम (दोनों) कसरतसे तेरी तस्बीह किया करें।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ۝۳۳

34. और हम कसरतसे तेरा जिक्र किया करें।

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ۝۳۴

35. बेशक तू हमें (सब हालात के तनाजुरमें) खूब देखनेवाला है।

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۝۳۵

36. (अल्लाहने) इर्शाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! तुम्हारी हर मांग तुम्हे अता कर दी।

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَى ۝۳۶

37. और बेशक हमने तुम पर एक और बार (इससे पेहले भी) ऐहसान फ़रमाया था।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۝۳۷

38. जब हमने तुम्हारी वालिदा के दिल में वोह बात डाल दी जो डाली गई थी।

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝۳۸

39. कि तुम उस (मूसा عليه السلام) को संदूक में रख दो फिर उस (संदूक) को दरिया में डाल दो फिर दरिया उसे किनारे के साथ आ लगाएगा, उसे मेरा दुश्मन और उसका दुश्मन उठा लेगा, और मैंने तुझ पर अपनी जनाब से (खास) मुहब्बत का परतव डाल दिया है (या'नी तेरी सूरत को इस क़दर प्यारी और मन मोहनी बना दिया है कि जो तुझे देखेगा फ़रेफ़ता हो जाएगा), और (येह इस लिए किया) ताकि तुम्हारी परवरिश मेरी आँखों के सामने की जाए।

إِنِ اقْتَدَفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْتَدِفِيهِ

فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ

يَا خُذْهُ عَدُوِّي وَعَدُوُّ لَهٗ ۝

وَآتَقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي ۝

وَلِيُضَمَّ عَلَيَّ عَيْنِي ۝۳۹

40. और जब तुम्हारी बहन (अजनबी बन कर) चलते चलते (फिरऔनके घरवालोंसे) केहने लगी : क्या मैं तुम्हें किसी (ऐसी औरत) की निशानदही कर दूँ जो इस (बच्चे) की परवरिश कर दे फिर हमने तुमको तुम्हारी वालिदाकी तरफ़ (परवरिश के बहाने) वापस लौटा दिया ताकि उसकी आँख भी ठंडी होती रहे और वोह रंजीदा भी न हो, और तुमने (क़ौमे फिरऔन के) एक (काफ़िर) शख्सको मार डाला था फिर हमने तुम्हें (उस) ग़मसे (भी) नजात बख़्शी और हमने तुम्हें बहुत सी आज़माइशों से गुज़ार कर ख़ूब जांचा, फिर तुम कई साल अहले मद्यन में ठेहरे रहे फिर तुम (अल्लाह के) मुक़र्रर कर्दह वक़्त पर (यहां) आ गए ऐ मूसा ! (उस वक़्त उनकी उम्र ठीक चालीस बरस हो गई थी)।

41. और (अब) मैंने तुम्हें अपने (अग्रे रिसालत और खुसूसी इन्आम के) लिए चुन लिया है।

42. तुम और तुम्हारा भाई (हारून) मेरी निशानियां ले कर जाओ और मेरी यादमें सुस्ती न करना।

43. तुम दोनों फिरऔनके पास जाओ बेशक वोह सरकशी में हदसे गुज़र चुका है।

44. सो तुम दोनों उससे नरम (अंदाज में) गुफ्तगू करना शायद वोह नसीहत कुबूल कर ले या (मेरे गजब से) डरने लगे।

45. दोनों ने अर्ज़ किया : ऐ हमारे रब ! बेशक हमें अंदेशा है के वोह हम पर ज़ियादती करे(गा) या (ज़ियादह) सरकश हो जाए(गा)।

46. इर्शाद फ़रमाया : तुम दोनों न डरो बेशक मैं तुम दोनों

إِذْ تَسْتَشِيْ اُخْتِكَ فَتَقُوْلُ هَلْ
اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗٓ ط فَرَجَعْتُكَ
اِلٰى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا
تَحْزَنُ ۗ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَجَعَلْنَاكَ
مِّنَ الْغَمِّ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا ۗ فَكَلِمَتٌ
مِّنْ سِنِّيْنَ فِيْ اَهْلِ مَدْيَنَ ۗ ثُمَّ جِئْتَ
عَلٰى قَدَرٍ يُّؤَسِّى ۝۴۰

وَ اصْطَفَعْنَاكَ لِنَفْسِيْ ۝۴۱

اِذْ هَبُّ اُنْتِ وَاُخُوْكَ بِاٰيَتِيْ وَ لَا تَتَيْنَا
فِيْ ذِكْرِيْ ۝۴۲

اِذْ هَبَّا اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝۴۳

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيْسًا لَّعَلَّهٗ
يَتَذَكَّرُ اَوْ يَحْشٰى ۝۴۴

قَالَا رَبَّنَا اِنَّا نَخَافُ اَنْ يَّفْرِطَ
عَلَيْنَا اَوْ اَنْ يَّطْعٰى ۝۴۵

قَالَ لَا تَخَافَا اِنَّنِيْ مَعَكُمَا

के साथ हूँ मैं (सब कुछ) सुनता और देखता हूँ।

47. पस तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो हम तेरे रबके भेजे हुए (रसूल) हैं सो तू बनी इसराईल को (अपनी गुलामीसे आजाद कर के) हमारे साथ भेज दे और उन्हें (मज़ीद) अजिज़त न पहुंचा, बेशक हम तेरे पास तेरे रबकी तरफ़ से निशानी ले कर आए हैं, और उस शख़्स पर सलामती हो जिसने हिदायत की पैरवी की।

48. बेशक हमारी तरफ़ वही भेजी गई है कि अज़ाब (हर) उस शख़्स पर होगा जो (रसूल को) झुटलाएगा और (उससे) मुंह फेर लेगा।

49. (फ़िरऔन ने) कहा तो ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है?

50. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया: हमारा रब वोही है जिसने हर चीज़को (उसके लाइक) वुजूद बख़्शा फिर (उसके हस्बे हाल) उसकी रहनुमाई की।

51. (फ़िरऔनने) कहा तो (उन) पहली क़ौमों का क्या हाल हुवा (जो तुम्हारे रबको नहीं मानती थीं)।

52. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया: उनका इल्म मेरे रबके पास किताबमें (महफूज़) है न मेरा रब भटकता है और न भूलता है।

53. वोही है जिसने ज़मीनको तुम्हारे रहने की जगह बनाया और उसमें तुम्हारे (सफ़र करने के) लिए रास्ते बनाए और आस्मानकी जानिबसे पानी उतारा, फिर हमने उस (पानी) के ज़रीए (ज़मीनसे) अन्वाओ अक्सास की नबातात के जोड़े निकाल दिए।

أَسْمَاءُ وَأَرْسَى ٣٦

فَأْتِيَهُ فَفُورًا إِنَّا رَسُولًا رَبِّكَ
فَأَرْسِلْ مَعَنَا بِنِي إِسْرَائِيلَ
وَلَا تُعَدِّبْهُمْ ٣٧ قَدْ جِئْنَا بِآيَةٍ
مِّنْ رَبِّكَ ٣٨ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَنَا

الْهُدَى ٣٩

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ
عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ٣٨

قَالَ فَنَنْ رَبُّكُمَا يُوسَىٰ ٣٩

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ
خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ٤٠

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ٤١

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ
لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَىٰ ٤٢

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا
وَسَلَكَ لَكُم فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً ٤٣ فَأَخْرَجْنَا بِهِ
أَرْوَاجًا
مِّنْ تَبَاتٍ شَتَّىٰ ٤٣

54. तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ, बेशक उसमें दानिशमंदों के लिए निशानियां हैं।

55. (ज़मीन की) उसी (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया और उसीमें हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दूसरी मर्तबा (फिर) निकालेंगे।

56. और बेशक हमने उस (फ़िरऔन) को अपनी सारी निशानियां (जो मूसा और हारून عليهما السلام को दी गई थीं) दिखाई मगर उसने झुटलाया और (मानने से) इन्कार कर दिया।

57. उसने कहा : ऐ मूसा ! क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि तुम अपने जादू के ज़रीए हमें हमारे मुल्क से निकाल दो ?

58. सो हम भी तुम्हारे पास उसी की मानिन्द जादू लाएंगे तुम हमारे और अपने दरमियान (मुक़ाबले के लिए) वा'दा तय कर लो जिसकी ख़िलाफ़ वरज़ी न हम करें और न ही तुम, (मुक़ाबले की जगह) खुला और हमवार मैदान हो।

59. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : तुम्हारे वा'दे का दिन यौमे ईद (सालाना जश्नका दिन) है और यह कि (उस दिन) सारे लोग चाश्त के वक़्त जमा' हो जाएं।

60. फिर फ़िरऔन (मजलिस से) वापस मुड़ गया सो उसने अपने मक्रो फ़रेब (की तदबीरों) को इकठ्ठा किया फिर (मुक़र्ररा वक़्त पर) आ गया।

61. मूसा (عليه السلام) ने उन (जादूगरों) से फ़रमाया : तुम पर अफ़सोस (ख़बरदार!) अल्लाह पर झूटा बोहतान मत बांधना वरना वोह तुम्हें अज़ाबके ज़रीए तबाहो बरबाद कर देगा और वाकई वोह शख़्स ना मुराद हुआ जिसने (अल्लाह पर) बोहतान बांधा।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ٥٤

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ٥٥

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ الْآيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ٥٦

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ٥٧

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ٥٨

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْتَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ٥٩

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ٦٠

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ٦١

62. चुनान्चे वोह (जादूगर) अपने मुआमले में बाहम झगड़ पड़े और चुपके चुपके सरगोशियां करने लगे।

فَتَنَّا رَعْوَا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا
النَّجْوَى ٢٢

63. कहने लगे : येह दोनों वाकई जादूगर हैं जो येह इरादा रखते हैं कि तुम्हें जादू के ज़रीए तुम्हारी सरज़मीन से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मिसाली मज़हबो सकाफ़त को नाबूद कर दें।

قَالُوا إِنَّ هَذَيْنِ لَسِحْرَانِ يُرِيدَانِ
أَنْ يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمْ
النُّشْلَى ٢٣

64. (उन्होंने बाहम फैसला किया) पस तुम (जादूकी) अपनी सारी तदाबीर जमा' कर लो फिर क़तार बांध कर (इकट्ठे ही) मैदान में आ जाओ और आजके दिन वोही कामयाब रहेगा जो ग़ालिब आ जाएगा।

فَأَجْعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اسْتَوُوا صَفًّا
وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى ٢٤

65. (जादूगर) बोले : ऐ मूसा ! या तो तुम (अपनी चीज़) डालो और या हम ही पहले डालनेवाले हो जाएं।

قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِنَّمَا أَنْتَ تُنْقَىٰ وَإِنَّمَا
أَنْتَ نَكُونُ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ٢٥

66. (मूसा (ﷺ) ने) फ़रमाया बल्कि तुम ही डाल दो, फिर क्या था अचानक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के असरसे मूसा (ﷺ) के खयाल में यूं मद्सूस होने लगीं जिसे वोह (मैदान में) दौड़ रही हैं।

قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا جِبَالُهُمْ
عِصْبُهُمْ يَحْبِلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ
أَنهَا سَعَىٰ ٢٦

67. तो मूसा (ﷺ) अपने दिलमें एक छुपा हुआ खौफ़ सा पाने लगे।

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ٢٧

68. हमने (मूसा (ﷺ) से) फ़रमाया खौफ़ मत करो बेशक तुमही ग़ालिब रहोगे।

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ٢٨

69. और तुम (उस लाठीको) जो तुम्हारे दाहिने हाथमें है (ज़मीन पर) डाल दो वोह उस (फ़रैब) को निगल जाएगी जो उन्होंने (मसनूई तौर पर) बना रखा है। जो कुछ उन्होंने बना रखा है (वोह तो) फ़क़त जादूगर का फ़रैब है, और

وَ أَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا
صَنَعُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٌ ط

जादूगर जहाँ कहीं भी आएगा फ़लाह नहीं पाएगा।

70. (फिर ऐसा ही हुआ) पस सारे जादूगर सज्दे में गिर पड़े केहने लगे : हम हारून और मूसा (عليهما السلام) के रब पर ईमान ले आए।

71. (फिर औन केहने लगा) : तुम उस पर ईमान ले आए हो क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वोह (मूसा) तुम्हारा (भी) बड़ा (उस्ताद) है जिसने तुमको जादू सिखाया है पस (अब) मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव उल्टी समतों से काटूंगा और तुम्हें ज़रूर खजूरके तनों में सूली चढ़ाऊंगा और तुम ज़रूर जान लोगे कि हम में से कौन अज़ाब देनेमें ज़ियादह सख़्त और ज़ियादह मुद्दत तक बाकी रहेनेवाला है।

72. (जादूगरों ने) कहा : हम तुम्हें हरगिज़ उन वाज़ेह दलाइल पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आ चुके हैं, उस (रब) की क़सम जिसने हमें पैदा फ़रमाया है तू जो हुक्म करनेवाला है कर ले, तू फ़क़त (इस चंद रोज़ा) दुन्यवी ज़िन्दगी ही से मुतअल्लिक फ़ैसला कर सकता है।

73. बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए हैं ताकि वोह हमारी ख़ताएँ बख़्श दे और उसे भी (मुआफ़ फ़रमा दे) जिस जादूगरी पर तूने हमें मजबूर किया था, और अल्लाह ही बेहतर है और हमेशा बाकी रहेने वाला है।

74. बेशक जो शख़्स अपने रबके पास मुजरिम बन कर आएगा तो बेशक उसके लिए जहन्नम है, (और वोह ऐसा अज़ाब है कि) न वोह उसमें मर सकेगा और न ही ज़िन्दा रहेगा।

وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ٦٩

فَأَلْقَى السَّحْرَةَ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا
بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَى ٧٠

قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنُ لَكُمْ
إِنَّهُ لَكَيْدِيكُمْ الَّذِي عَلَّمَكُمُ
السَّحْرَ فَلَا قَطْعَنَ أَيْدِيكُمْ وَ
أَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَبْتَكُمْ
فِي جُدُوعِ النَّحْلِ وَلَتَعْلَمَنَّ آيَاتُنَا
أَشَدَّ عَذَابًا وَأَبْلَى ٧١

قَالُوا لَنْ نُؤْتِيَنَّكَ عَلَى مَا جَاءَنَا
مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ
مَا أَنْتَ قَاضٍ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ٧٢

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا
وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهٍ مِنَ السَّحْرِ
وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْلَى ٧٣

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ
لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا
يَحْيَى ٧٤

75. और जो शख्स उसके हुजूर मोमिन बन कर आएगा (मज़ीद यह कि) उसने नेक अमल किए होंगे तो उनही लोगों के लिए बुलंद दरजात है।

وَمَنْ يَأْتِهِمْ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ
الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ
الْعُلَى ٤٥

76. (वोह) सदा बहार बागात हैं जिनके नीचेसे नेहरें रवां हैं (वोह) उनमें हमेशा रहेवाले हैं, और यह उस शख्स का सिला है जो (कुफ़्रो मा'सियत की आलूदगी से) पाक हो गया।

جَنَّتٍ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَذَلِكَ
جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّى ٤٦

77. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ वही भेजी कि मेरे बंदों को रातों रात ले कर निकल जाओ, सो उनके लिए दरिया में (अपना असा मार कर) खुशक रास्ता बना लो, न (फ़िरऔन के) आ पकड़ने का ख़ौफ़ करो और न (ग़र्क होने का) अन्देशा रखो।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ
أَسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرَبْ لَهُمْ طَرِيقًا
فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفْ دَرَكًا
وَلَا تَخْشَى ٤٧

78. फिर फ़िरऔनने अपने लश्करों के साथ उनका तआकुब किया पस दरिया (की मौजों)ने उन्हें ढांप लिया जितना भी उन्हें ढांपा।

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ
مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ٤٨

79. और फ़िरऔनने अपनी क़ौमको गुमराह कर दिया और उन्हें सीधे रास्ते पर न लगाया।

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَاهَدَىٰ ٤٩

80. ऐ बनी इसराईल! (देखो) बेशक हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मनसे नजात बख़्शी और हमने तुमसे (कोहे) तूरकी दाहिनी जानिब (आने का) वा'दा किया और (वहां) हमने तुम पर मन्नो सल्ला उतारा।

يٰبَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكُمْ
مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَعَدْنَاكُمْ جَانِبَ
الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمْ
الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ٥٠

81. (और तुमसे फ़रमाया) उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जिनकी हमने तुम्हें रोज़ी दी है और उसमें हृद से न बढ़ो वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब वाजिब हो जाएगा, और

كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا
تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۗ وَ

जिस पर मेरा ग़ज़ब वाजिब हो गया सो वोह वाकई हलाक हो गया।

82. और बेशक मैं बहुत ज़ियादह बख़्शनेवाला हूँ उस शख्सको जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया फिर हिदायत पर (काइम) रहा।

83. और ऐ मूसा! तुमने अपनी क़ौमसे (पहले तूर पर आ जाने में) जल्दी क्यों की।

84. (मूसा عليه السلام ने) अर्ज़ किया : वोह लोग भी मेरे पीछे आ रहे हैं और मैंने (ग़्लबए शौको महबबत में) तेरे हुज़ूर पहुंचने में जल्दी की है ऐ मेरे रब! ताकि तू राज़ी हो जाए।

85. इर्शाद हुवा : बेशक हमने तुम्हारे (आने के) बाद तुम्हारी क़ौमको फ़िले में मुब्तिला कर दिया है और उन्हें सामरीने गुमराह कर डाला है।

86. पस मूसा (عليه السلام) अपनी क़ौमकी तरफ़ सख़्त ग़ज़बनाक (और) रंजीदह हो कर पलट गए (और) फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे रबने तुमसे एक अच्छा वा'दा नहीं फ़रमाया था, क्या तुम पर वा'दे (के पूरे होने) में तवील मुद्दत गुज़र गई थी, क्या तुमने येह चाहा कि तुम पर तुम्हारे रबकी तरफ़से ग़ज़ब वाजिब (और नाज़िल) हो जाए? पस तुमने मेरे वा'देकी ख़िलाफ़ वरज़ी की है।

87. वोह बोले : हमने अपने इख़्तियारसे आपके वा'देकी ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं की मगर (हुवा येह कि) क़ौमके ज़ेवरातके भारी बोझ हम पर लाद दिए गए थे तो हमने उन्हें (आग में) डाल दिया फिर उसी तरह सामरी ने (भी) डाल दिए।

مَنْ يَحِلُّ عَلَيْكَ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ۝۸۱

وَإِنِّي لَعَفَاءٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ

وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝۸۲

وَمَا أَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوسَىٰ ۝۸۳

قَالَ هُمْ أَوْلَاءٌ عَلَىٰ أَثْرِي وَعَجِلْتُ

إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝۸۴

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ

بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝۸۵

فَرَجَعَهُ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ

أَسْفَاهًا قَالَ يُقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ

رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا أَفَطَالَ عَلَيْكُمْ

الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ

غَضَبٌ مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ

مُوعِدِي ۝۸۶

قَالُوا مَا آخُلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا

وَلَكِنَّا حَسِبْنَا أَوْزَارًا مِّنْ زِينَةِ

الْقَوْمِ فَقَدْ فُتِنَّا فَكَذَلِكَ أَلْقَىٰ

السَّامِرِيُّ ۝۸۷

88. फिर उस (सामरी)ने उनके लिए (उन गले हुए ज़ेवरात से) एक बछड़े का क़ालिब (तैयार कर के) निकाल लिया उसमें (से) गाय की सी आवाज़ (निकलती) थी तो उन्होंने कहा यह तुम्हारा मा'बूद है और मूसा (ﷺ) का (भी येही) मा'बूद है बस वोह (सामरी यहां पर) भूल गया।

89. भला क्या वोह (इतना भी) नहीं देखते थे कि वोह (बछड़ा) उन्हें किसी बात का जवाब (भी) नहीं दे सकता और न उनके लिए किसी नुक़सानका इख़्तियार रखता है और न नफ़े' का।

90. और बेशक हारून (ﷺ) ने (भी) उनको उससे पहले (तंबीहन) केह दिया था कि ऐ क़ौम! तुम इस (बछड़े)के ज़रीए तो बस फ़िल्ते में ही मुब्तिला हो गए हो, हालांकि बेशक तुम्हारा रब (येह नहीं वोही) रहमान है पस तुम मेरी पैरवी करो और मेरे हुक्म की इताअत करो।

91. वोह बोले : हम तो उसी (की पूजा) पर जमे रहेंगे ता वक्ते कि मूसा (ﷺ) हमारी तरफ़ पलट आएँ।

92. (मूसा (ﷺ) ने) फ़रमाया : ऐ हारून ! तुमको किस चीज़ने रोके रखा जब तुमने देखा कि येह गुमराह हो रहे हैं।

93. (मज़ीद येह कि तुम्हें किसने मना' किया कि उन्हें सख़्तीसे रोकने में) तुम मेरे तरीके की पैरवी न करो, क्या तुमने मेरी ना फ़रमानी की ?

94. (हारून (ﷺ) ने) कहा : ऐ मेरी मां के बेटे ! आप न मेरी दाढ़ी पकड़ें और न मेरा सर, मैं (सख़्ती करने में) इस बातसे डरता था कि कहीं आप येह (न) कहें कि तुमने

فَأُخْرِجْ لَهُمْ عَجَلًا جَسَدًا لَّهُ
خَوَاطِرٌ فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمُ وَإِلَهُ
مُوسَىٰ قَنَسِي ۗ (٨٨)

أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ
تَوَلَّاهُ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَ
لَا نَفْعًا ۗ (٨٩)

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلُ
يَقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ
الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا
أَمْرِي ۗ (٩٠)

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْكَ عٰكِفِينَ
حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۗ (٩١)
قَالَ يَهُرُؤُنَ مَا مَنَّكَ إِذْ
رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۗ (٩٢)

أَلَا تَتَّبِعُنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ۗ (٩٣)

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي
وَلَا بِرَأْسِي ۗ إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ

बनी इसराईल के दरमियान फिरका बंदी कर दी है और मेरे कौल की निगेहदाशत नहीं की।

95. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया ऐ सामरी! (बता) तेरा क्या मुआमला है ?

96. उसने कहा : मैंने वोह चीज़ देखी जो उन लोगोंने नहीं देखी थी सो मैंने उस फिरस्तादह (फ़रिश्ते) के नक्शे क़दमसे (जो आपके पास आया था) एक मुट्ठी (मिट्टी की) भर ली फिर मैंने उसे (बछड़े के क़ालिब में) डाल दिया और इसी तरह मेरे नफ़्सने मुझे (येह बात) भली कर दिखाई।

97. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : पस तू (यहां से निकल कर) चला जा चुनान्चे तेरे लिए (सारी) ज़िन्दगी में येह (सज़ा) है कि तू (हर किसीको येही) केहता रहे (मुझे) न छूना (मुझे न छूना), और बेशक तेरे लिए एक और वा'दए (अज़ाब) भी है जिसकी हरगिज़ ख़िलाफ़ वरज़ी न होगी, और तू अपने उस (मन घड़त) मा'बूद की तरफ़ देख जिस (की पूजा) पर तू जम कर बैठा रहा, हम उसे ज़रूर जला डालेंगे फिर हम उस (की राख) को ज़रूर दरिया में अच्छी तरह बिखेर देंगे।

98. (लोगो !) तुम्हारा मा'बूद सिर्फ़ (वोही) अल्लाह है जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह हर चीज़को (अपने) इल्मके अहाते में लिए हुए है।

99. इस तरह हम आपको (ऐ हबीबे मुअज़्जम !) उन (क़ौमों) की ख़बरें सुनाते हैं जो गुज़र चुकी हैं और बेशक हमने आपको अपनी ख़ास जनाबसे ज़िक्र (या'नी नसीहतनामा) अ़ता फ़रमाया है।

فَرَّقْتُ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
وَلَمْ تَزُقْ قَوْلِي ۙ ﴿٩٣﴾

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يُسَامِرِي ۙ ﴿٩٥﴾

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ
فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ
فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلْتُ لِي
نَفْسِي ۙ ﴿٩٦﴾

قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ
أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۗ وَإِنَّ لَكَ
مَوْعِدًا لَّنْ تَخْلَفَهُ ۗ وَانظُرْ إِلَى
إِلْهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا
لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ
نَسْفًا ۙ ﴿٩٧﴾

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ ۗ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۙ ﴿٩٨﴾

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ
مَا قَدْ سَبَقَ ۗ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ
لَدُنَّا ذِكْرًا ۙ ﴿٩٩﴾

100. जो शख्स उससे रूगरदानी करेगा तो बेशक वोह क़ियामत के दिन सख्त बोझ उठाएगा।

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۝١٠٠

101. वोह उस (अज़ाब) में हमेशा (पड़े) रहेंगे, और उनके लिए क़ियामत के दिन बहुत ही बुरा बोझ होगा।

خَلِيدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝١٠١

102. जिस दिन सूर फूँका जाएगा और उस दिन हम मुजरिमों को यूँ जमा' करेंगे कि उनके जिस्म और आँखें (शिद्दते ख़ौफ़ और अधेपन के बाइस) नीलगूँ होंगी।

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَ نَحْشُرُ
الْمُجْرِمِينَ يَوْمِئِذٍ زُرْقًا ۝١٠٢

103. आपसमें चुपके चुपके बातें करते होंगे कि तुम दुनियामें मुश्किल से दस दिन ही ठेहरे होंगे।

يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا
عَشْرًا ۝١٠٣

104. हम खूब जानते हैं वोह जो कुछ केह रहे होंगे जबकि उनमें से एक अक्लो अमल में बेहतर शख्स कहेगा कि तुम तो एक दिन के सिवा (दुनियामें) ठेहरे ही नहीं हो।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا
يَوْمًا ۝١٠٤

105. और आपसे येह लोग पहाड़ों की निस्बत सवाल करते हैं सो फ़रमा दीजिए : मेरा रब उन्हें रेज़ा रेज़ा करके उड़ा देगा।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ
يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝١٠٥

106. फिर उसे हमवार और बे आबो गयाह ज़मीन बना देगा।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝١٠٦
لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝١٠٧

107. जिसमें आप न कोई पस्ती देखेंगे न कोई बुलंदी।

108. उस दिन लोग पुकारनेवाले के पीछे चलते जाएंगे उस (के पीछे चलने) में कोई कजी नहीं होगी, और (खुदाए) रहमानके जलाल से सब आवाज़ें पस्त हो जाएंगी पस तुम हलकी सी आहट के सिवा कुछ न सुनोगे।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ
لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ
فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَبْسًا ۝١٠٨

109. उस दिन सिफारिश सूदमंद न होगी सिवाए उस शख्स (की सिफारिश) के जिसे (खुदाए) रहमानने इज़्मो (इजाज़त) दे दी है और जिसकी बातसे वोह राज़ी हो गया है (जैसा कि अंबियाओ मुर्सलीन, अवलिया, मुत्तकीन, मा'सूम बच्चों और दीगर कई बंदों का शफ़ाअत करना साबित है)।

110. वोह उन (सब चीज़ों) को जानता है जो उनके आगे हैं और जो उनके पीछे हैं और वोह (अपने) इल्मसे उस (के इल्म) का अहाता नहीं कर सकते।

111. और (सब) चेहरे उस हमेशा जिन्दा (और) काइम रेहनेवाले (रब) के हुजूर झुक जाएंगे, और बेशक वोह शख्स ना मुराद होगा जिसने जुल्मका बोझ उठा लिया।

112. और जो शख्स नेक अमल करता है और वोह साहिबे ईमान भी है तो उसे न किसी जुल्मका खौफ़ होगा और न नुक्सान का।

113. और उसी तरह हमने इस (आखिरी वही) को अरबी ज़बानमें (ब शकले) कुरआन उतारा है और हमने उसमें (अज़ाबसे) डराने की बातें बार बार (मुख्तलिफ़ तरीक़ोंसे) बयान की हैं ताकि वोह परहेज़गार बन जाएं या (येह कुरआन) उन (के दिलों) में यादे (आखिरत या कुबूले नसीहतका जजूबा) पैदा कर दे।

114. पस अल्लाह बुलंद शानवाला है वोही बादशाहे हकीकी है, और आप कुरआन (के पढ़ने) में जल्दी न किया करें कब्ल इसके कि उसकी वही आप पर पूरी उतर जाए, और आप (रबके हुजूर येह) अर्ज़ किया करें कि ऐ मेरे रब! मुझे इल्ममें और बढ़ा दे।

115. और दर हकीकत हमने उससे (बहुत) पहले

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ
أُذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۝۹

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝۱۰

وَعَنْتِ أُلُجُوهٌ لِّدَحَى الْقَيُْومِ ۝
وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝۱۱

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَا يَخْفَ ظُلْمًا وَلَا هَضْبًا ۝۱۲

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَ
صَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ أَوْ يُحَدِّثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝۱۳

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۝ وَلَا
تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يُنْزَلَ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ
زِدْنِي عِلْمًا ۝۱۴

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَى آدَمَ مِنْ قَبْلِ

आदम (ﷺ) को ताकीदी हुक्म फ़रमाया था सो वोह भूल गए और हमने उनमें बिलकुल (ना फ़रमानी का कोई) इरादा नहीं पाया (येह महज़ एक भूल थी)।

116. और (वोह वक्त याद करें) जब हमने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया तुम आदम (ﷺ) को सजदह करो तो उन्होंने सजदह किया सिवाए इब्लीस के, उसने इन्कार किया।

117. फिर हमने फ़रमाया : ऐ आदम ! बेशक येह (शैतान) तुम्हारा और तुम्हारी बीवीका दुश्मन है, सो येह कहीं तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम मुशक़्तमें पड़ जाओगे।

118. बेशक तुम्हारे लिए इस (जन्नत)में येह (राहत) है कि तुम्हें न भूख लगेगी और न बर्हना होगे।

119. और येह कि तुम्हें न यहां प्यास लगेगी और न धूप सताएगी।

120. पस शैतानने उन्हें (एक) ख़याल दिला दिया वोह केहने लगा : ऐ आदम ! क्या मैं तुम्हें (कुर्बे इलाहीकी जन्नतमें) दाइमी ज़िन्दगी बसर करनेका दरख़्त बता दूँ और (ऐसी मलकूती) बादशाहत (का राज़) भी जिसे न ज़वाल आएगा न फ़ना होगी।

121. सो दोनोंने (इस मुकामे कुर्बे इलाही की ला ज़वाल ज़िन्दगीके शौकमें) उस दरख़्तसे फल खा लिया पस उन पर उनके मुक़ामहाए सत्र ज़ाहिर हो गए और दोनों अपने (बदन) पर जन्नत (के दरख़्तों) के पत्ते चिपकाने लगे और आदम (ﷺ) से अपने रबके हुक्म (को समझने) में फ़रो गुज़ाशत हूई ★ सो वोह (जन्नत में दाइमी ज़िन्दगी की) मुराद न पा सके।

★ (कि मुमानिअत मख़सूस एक दरख़्त की थी या उसकी पूरी नौअ की थी, क्योंकि आप (ﷺ) ने फल उस मख़सूस दरख़्तका नहीं खाया था बल्कि उसी नौअ के दूसरे दरख़्त से खाया था, येह समझ कर

فَسِيءَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ۝١١٥

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

فَسَجَدُوْا اِلَّا اِبْلٰٓسَ ۝١١٦

فَقُلْنَا يَا اٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوُّكَ وَ

لِرِٔوَجِكَ فَلَا يُخْرِجُكَ كَمَا مِنَ الْجَنَّةِ

فَتَشْتٰى ۝١١٧

اِنَّ لَكَ اَلًا تَجُوْءُ فِيْهَا وَ

لَا تَعْرٰى ۝١١٨

وَ اِنَّكَ لَا تَطْمُوْا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝١١٩

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَال

يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدْرٰكَ عَلٰى شَجَرَةٍ

الْخٰلِدِ وَمَلٰٓئِكَ لَا يَبۜئِلُوْا ۝١٢٠

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتۜ لَهَا سَوَآئِهَا

وَ طَفِقَا يَخۜصِفۜن عَلَيۜهۜمَا مِنْ وَّرَاقِ

الْجَنَّةِ ۝ وَ عَصٰى اٰدَمُ رَبَّهٗ

فَعَوٰى ۝١٢١

122. फिर उनके रबने उन्हें (अपनी कृर्बतो नुबुव्वत के लिए) चुन लिया और उन पर (अफ़वो रहमत की खास) तवज्जोह फ़रमाई और मंज़िले मक्सूद की राह दिखा दी।

123. इशाद हुवा : तुम यहां से सबके सब उतर जाओ, तुम में से बा'ज बा'ज के दुश्मन होंगे, फिर जब मेरी जानिबसे तुम्हारे पास कोई हिदायत (वही) आ जाए सो जो शख्स मेरी हिदायतकी पैरवी करेगा तो वोह न (दुनियामें) गुमराह होगा और न (आखिरत में) बदनसीब होगा।

124. और जिसने मेरे ज़िक्र (या'नी मेरी याद और नसीहत) से रूगरदानी की तो उसके लिए दुन्यावी मआश (भी) तंग कर दिया जाएगा और हम उसे कियामत के दिन (भी) अँधा उठाएंगे।

125. वोह कहेगा : ऐ मेरे रब ! तूने मुझे (आज) अँधा क्यों उठाया हालांकि मैं (दुनिया में) बीना था।

126. इशाद हुवा : ऐसा ही (हुवाकि दुन्या में) तेरे पास हमारी निशानियां आईं पस तूने उन्हें भुला दिया और आज उसी तरह तू (भी) भुला दिया जाएगा।

127. और उसी तरह हम उस शख्स को बदला देते हैं जो (गुनाहों में) हृदसे निकल जाए और अपने रबकी आयतों पर ईमान न लाए, और बेशक आखिरत का अज़ाब बड़ा ही सख्त और हमेशा रेहनेवाला है।

128. क्या उन्हें (इस बातने)हिदायत न दी कि हमने उनसे पहले कितनी ही उम्मों को हलाक कर दिया जिनकी रहाइशागाहों में (अब) येह लोग चलते फिरते हैं, बेशक उसमें दानिशमंदों के लिए(बहुत सी) निशानियां हैं।

129. और अगर आपके रबकी जानिबसे एक बात पेहले

कि शायद मुमानिअत उसी एक दरख्त की थी)

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ
وَهَدَاهُ ۝۱۲۲

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَبِيحًا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَمَا يُآتِيَنَّكُمْ مِنْ بِي
هُدًى ۖ فَمَنْ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا
يَضِلُّ وَلَا يَشْقَى ۝۱۲۳

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ
مَعِيشَةً ضَنْكًا ۖ وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ أَعْمَى ۝۱۲۴

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَى
وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝۱۲۵

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيْتَهَا
وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنسى ۝۱۲۶

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ
يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۖ وَلَعَذَابُ
الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْغَى ۝۱۲۷

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ
مِنَ الْقُرُونِ يَيسُورًا فِي مَسْكِنِهِمْ ۖ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهى ۝۱۲۸

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ

से तय न हो चुकी होती और (उनके अज़ाब के लिए क़ियामत का) वक्त मुक़र्रर न होता तो (उन पर अज़ाब का अभी उतरना) लाज़िम हो जाता।

130. पस आप उनकी (दिल आज़ार) बातों पर सब फ़रमाया करें और अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह किया करें तुलूए आफ़ताब से पहले (नमाज़े फ़जर में) और उसके गुरुबसे क़ब्ल (नमाज़े अ़सर में) और रातकी इब्तिदाई साअतोंमें (या'नी मग़रिब और इशामें) भी तस्बीह किया करें और दिनके किनारों पर भी (नमाज़े ज़ोहरमें जब दिनका निस्फ़ अच्चल ख़त्म और निस्फ़े सानी शुरू होता है, (ऐ हबीबे मुकर्रम! यह सब कुछ इस लिए है) ताकि आप राज़ी हो जाएं।

131. और आप दुन्यवी ज़िन्दगीमें ज़ेबो आराइश की उन चीज़ोंकी तरफ़ हैरतो तअज्जुबकी निगाह न फ़रमाएं जो हमने (काफ़िर दुनियादारों के) बा'ज़ तब्कातको (आरज़ी) लुत्फ़ अंदोज़ीके लिए दे रखी हैं ताकि हम उन (ही चीज़ों) में उनके लिए फ़िल्ता पैदा कर दें, और आपके रब की (उख़रवी) अ़ता बहतर और हमेशा बाक़ी रहनेवाली है।

132. और आप अपने घरवालों को नमाज़का हुक्म फ़रमाएं और इस पर साबित क़दम रहें, हम आपसे रिज़क़ तलब नहीं करते (बल्कि) हम आपको रिज़क़ देते हैं, और बेहतर अंजाम परहेज़गारी का ही है।

133. और (कुफ़्फ़ार केहते हैं कि यह (रसूल) हमारे पास अपने रबकी तरफ़से कोई निशानी क्यों नहीं लाते, क्या उनके पास उन बातों का वाज़ेह़ सुबूत (या'नी क़ुरआन) नहीं आ गया जो अगली किताबों में (मजकूर) थीं।

134. और अगर हम उन लोगोंको इससे पहले (ही)

لَكَانَ لِرِأَمًا وَأَجَلَ مُّسَيِّ ١٣٩

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَا مِ الْاَيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافِ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ١٤٠

وَلَا تَدَنَّ عَيْنَيْكَ اِلَىٰ مَا مَتَّعَايَةَ اَرْوَاَجًا مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِمَهُمْ فِيهِ ١٣١ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّ اَبْلَىٰ ١٣٢

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاَصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ ١٣٣ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ١٣٤

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِيْنَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ ١٣٥ اَوْلَمْ تَأْتِيَهُمْ بَيِّنَةٌ مَّا فِي الصُّحُفِ الْاُولَىٰ ١٣٦

وَلَوْ اَنَّا اَهْلَكْنَاهُمْ بَعْدَآبٍ مِنْ

किसी अजाबके ज़रीए हलाक कर डालते तो येह केहते :
ऐ हमारे रब ! तूने हमारे पास किसी रसूल को क्यों न भेजा
कि हम तेरी आयतों की पैरवी कर लेते इससे कब्ल कि
हम ज़लील और रुस्वा होते ।

135. फ़रमा दीजिए : हर कोई मुन्तज़िर है, सो तुम
इन्तिज़ार करते रहो, पस तुम जल्द ही जान लोगे कि कौन
लोग राहे रास्तवाले हैं और कौन हिदायतयाफ़ता हैं ।

قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ
إِلَيْنَا رَسُولًا فَتُنَبِّئَنَا بِالْبَيْتِ مِنْ
قَبْلِ أَنْ نَذِلَّ وَنَحْزَى ۝۱۳۴

قُلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ فَتَرَبِّصُوا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ
السَّوِيِّ وَمَنْ اهْتَدَى ۝۱۳۵